नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

शिक्षा परिसर और विवादास्पद गतिविधियां

देश के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान ज्ञान, विचार और लोकतांत्रिक विमर्श के केंद्र होते हैं. यहां असहमति के स्वर उठना स्वाभाविक है, लेकिन जब विरोध प्रदर्शन की आड़ में देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा को चुनौती देने वाले नारे लिखे जाने लगें, तब इसे सामान्य छात्र आंदोलन मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. दिल्ली के जामिया मिल्लिया इस्लामिया और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में सामने आई घटनाओं ने एक बार फिर शैक्षणिक परिसरों में अनुशासन, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी के सवाल खड़े किए हैं. जामिया में छात्रसंघ की बहाली की मांग को लेकर 13 दिन से चल रहे प्रदर्शन के बीच दीवारों पर 'फ्री कश्मीर', शरजील इमाम की रिहाई और सेना के खिलाफ आपत्तिजनक नारे लिखे जाने का मामला सामने आया. प्रशासन ने इन नारों को मिटवा दिया, लेकिन छात्रों और सुरक्षा गार्डों के बीच झड़प ने स्थिति को और तनावपूर्ण बना दिया. जेएनयू में भी उमर खालिद की रिहाई और नक्सलवाद के समर्थन में नारे लिखे जाने की खबरों ने चिंता बढ़ाई है. इन घटनाओं को गंभीरता से लेने की जरूरत है, लेकिन किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले तथ्यों की जांच भी उतनी ही जरूरी है. विवादित नारे किसने लिखे, परिसर में टकराव की परिस्थितियां क्या थीं और क्या इन घटनाओं के पीछे कोई संगठित प्रयास था, इन सभी पहलुओं की जांच होनी चाहिए. बहरहाल, छात्रसंघ चुनाव की मांग अपने आप में अनुचित नहीं है. विश्वविद्यालयों में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और छात्र प्रतिनिधित्व का अपना महत्व है. छात्रों को अपनी मांग रखने और नीतियों की आलोचना करने का अधिकार है. लेकिन इस अधिकार की सीमा हिंसा, धमकी, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान और राष्ट्रीय सुरक्षा को चुनौती देने वाली गतिविधियों तक नहीं फैल सकती. इसी तरह, प्रशासन को भी विरोध की हर आवाज को अनुशासनहीनता मानने से बचना चाहिए. लोकतंत्र में असहमति और अराजकता के बीच अंतर बनाए रखना जरूरी है. इस पूरे विवाद में राजनीतिक दलों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है. जनप्रतिनिधियों से अपेक्षा की जाती है कि वे तनावपूर्ण परिस्थितियों में संवाद और संयम का रास्ता अपनाएं. यदि किसी सांसद ने नियमों का उल्लंघन किया है या छात्रों को हिंसा के लिए उकसाया है, तो उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई होनी चाहिए. दरअसल, शैक्षणिक परिसरों को राजनीतिक संघर्ष का अखाड़ा बनने से रोकना विश्वविद्यालय प्रशासन, पुलिस और राजनीतिक नेतृत्व, तीनों की जिम्मेदारी है. सरकार और जांच एजेंसियों को निष्पक्षता के साथ कार्रवाई करनी चाहिए, जबकि छात्र संगठनों को भी अपने आंदोलनों की मर्यादा बनाए रखनी चाहिए. देश की सुरक्षा और लोकतांत्रिक स्वतंत्रता एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक स्वस्थ लोकतंत्र के पूरक हैं. भारत की एकता पर चोट करने वाली गतिविधियों के प्रति सख्ती जरूरी है, लेकिन इस सख्ती का आधार कानून, प्रमाण और निष्पक्ष जांच ही होना चाहिए. यही रास्ता देशविरोधी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के साथ लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा भी कर सकता है.

विंध्य की डायरी

सीएस के वायरल वीडियो से कटघरे में तीन इंजन की सरकार



डॉ संजय पयासी

कभी-कभी कुछ ऐसा हो जाता है, जिसकी कल्पना कम ही की जाती है. प्रदेश भर के नगरीय निकाय के जिम्मेदार अधिकारियों की बैठक में नगरीय प्रशासन विभाग के प्रमुख एसीएस संजय दुबे की कही गई बात के वायरल वीडियो ने तीन इंजन की सरकार को कटघरे में खड़ा कर दिया है. फिलहाल चर्चा का विषय बन चुके इस मामले को लेकर विंध्य के नगरीय निकाय के कर्ताधर्ता सकते में हैं. बड़े पैमाने पर लूटखसोट का अड्डा बन चुके नगरीय निकायों की कलई ऐसे समय खोली गई है जब नगरीय निकायों में चुनावी सरगर्मियां हल्की-फुल्की शुरू हो गई हैं. हालांकि प्रदेश के ज्यादातर बड़े नगरीय निकाय पिछले कई वर्षों से देश के सर्वश्रेष्ठ ब्यूरोक्रेट भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के हाथों में है. ऐसी स्थिति में एसीएस की कही बात से आईएएस लाबी में भी खींचतान शुरू हो गई है. बताया जा रहा है कि कई अधिकारियों ने इस बात पर कमर कस ली है कि अगर उंगली उनके ऊपर उठी तो वे सबकी कलई खोल कर रख देंगे. इस मामले में सरकार ने भी अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है. स्वयं विभाग की राज्यमंत्री ने बयान का वीडियो जारी कर इस मामले की उच्च स्तरीय जांच की बात दोहराई है. उल्लेखनीय है कि एसीएस ने कहा था की नगरीय निकायों में कितना भ्रष्टाचार हो रहा है यह उनकी जानकारी में है यह भी जानकारी में है कि कितने में माल खरीदा जाता है और उसकी वास्तविक कीमत क्या होती है.



विंध्य को जोड़ने वाली पहली ट्रेन दौड़ी

कई दशक पूर्व देखा गया सपना आखिरकार साकार होता नजर आ रहा है. पहली बार विंध्य से बुंदेलखंड रेल मार्ग से सीधे जुड़ गया है. शनिवार का दिन समूचे विंध्य और बुंदेलखंड के लिये ऐतिहासिक क्षण रहा जब दोनों को जोडने वाली पहली ट्रेन छुक-छुक करती तेज हार्न के साथ पटरियों पर दौड़ी. चुरहट से शुभारंभ के साथ प्रदेश के उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ला एवं रीवा व सीधी सांसद ने आम नागरिकों के साथ पहली ट्रेन में चुरहट से गोविंदगढ़ तक यात्रा की की. उधर नागौद में राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी, सांसद द्वय गणेश सिंह और ब्रम्हदेव शर्मा, विधायक नागेंद्र सिंह ने झंडी दिखाकर देवेंद्रनगर के लिए रवाना किया. सांसद शर्मा भी उसमें सवार होकर देवेंद्रनगर तक गए. इस दौरान जनप्रतिनिधियों ने क्षेत्रवासियों के साथ रेल सेवा शुरू होने की खुशी साझा की. वर्षों से रेल कनेक्टिविटी की प्रतीक्षा कर रहे क्षेत्र के लोगों के लिए यह यात्रा विशेष महत्व रखती है. पहली बार अपने क्षेत्र में ट्रेन का संचालन होते देख आम नागरिकों, विद्यार्थियों और स्थानीय लोगों में खासा उत्साह रहा.

विंध्य में कांग्रेस की सक्रियता बढ़ी



पूरी तरह छिन्न-भिन्न हो चुकी विंध्य में कांग्रेस के नए सिरे से जोड़े जा रहे ताने-बाने का असर धीरे-धीरे ही सही दिखने लगा है. हालांकि अनुभव के अभाव में बिना मजबूत सहारे के आगे बढ़ रहे नए दायित्वाधिकारी आगे बढ़ने के बजाय सत्ता की उलझनों में कुछ ऐसे उलझ जाते हैं कि उनके परिणाम कम नजर आते हैं. फिर भी जानकार यह मान रहे हैं कि कारवाँ बढ़ रहा है. कमजोर ही सही पर विपक्ष की भूमिका निर्वाह में फिलहाल कोई कोताही नजर नहीं आ रही है.

क्या भाजपा कायम रख पाएगी जनता का भरोसा?

मध्यप्रदेश की राजनीति शिवराज सिंह चौहान की सक्रियता, युवा अभियान और विंध्य की रेल



संजीव शर्मा

सीहोर जिले के कोसमी गांव में आदिवासी परिवारों के घर तोड़े जाने के बाद शुरू हुआ विरोध भाजपा के लिए प्रशासनिक संवेदनशीलता और राजनीतिक जवाबदेही की चुनौती बनकर उभरा है। 12 परिवारों के घरों पर कार्रवाई के बाद प्रभावितों ने जमीन के दस्तावेज, मुआवजे और पुनर्वास की मांग उठाई। विरोध के बीच केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अधिकारियों की कार्रवाई पर गंभीर एतराज किया। इसके बाद आंदोलन भोपाल की ओर बढ़ा और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव से मुलाकात की मांग की गई। इस असंतोष के बीच पार्टी के सामने आदिवासी समाज का भरोसा कायम रखने की जरूरत महसूस की जा रही है। दूसरी ओर लद्दू को लेकर पार्टी की चिंता लगातार बनी हुई है, इसे भांप कर युवाओं को संगठन से जोड़ने का अभियान पार्टी प्रांत में 5 नवंबर तक चलाएगी। विंध्य में रेल कनेक्टिविटी का विस्तार भी भाजपा के लिए नए अवसर और विकास का संदेश हैं। लेकिन इन अलग-अलग घटनाक्रमों के बीच पार्टी की असली चुनौती जनता से अब तक मिलते रहे समर्थन को स्थायी विश्वास में बदलने की है। इसके लिए केवल अभियान, घोषणाएं और विकास की उपलब्धियां पर्याप्त नहीं होंगी, बल्कि संवेदनशील प्रशासन, युवाओं की सार्थक भागीदारी और विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना भी जरूरी होगा। यही तय करेगा कि भाजपा का राजनीतिक समर्थन जनता के विश्वास में कितना बदल पाता है। दरअसल, मध्यप्रदेश की राजनीति में हाल के दिनों में भाजपा के सामने ऐसे घटनाक्रम रहे, जिनका असर केवल संबंधित क्षेत्रों या वर्गों तक सीमित नहीं रहेगा। इनके केंद्र में एक ही विषय है, क्या भाजपा जनता की अपेक्षाओं को राजनीतिक समर्थन में बदलने के साथ उनका भरोसा कायम रख पाएगी।

(लेखक नवभारत डिजिटल के संपादक हैं)



जवाबदेही की चुनौती

आदिवासी परिवारों से जुड़े घटनाक्रम में शिवराज सिंह चौहान की सक्रियता को केवल प्रभावित लोगों के पक्ष में खड़े होने तक सीमित करके नहीं देखा जा सकता। उनके हस्तक्षेप ने प्रशासनिक कार्रवाई और प्रभावित परिवारों की सुनवाई के प्रश्न को सामने ला दिया है। यहां भाजपा के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न है कि किसी स्थानीय प्रशासनिक कार्रवाई के बाद प्रभावित लोगों को न्याय और राहत दिलाने की व्यवस्था कितनी प्रभावी है। यदि शिकायतों के समाधान के लिए वरिष्ठ नेताओं के हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ती है, तो यह प्रशासनिक व्यवस्था की संवेदनशीलता पर भी प्रश्न चिन्ह खड़े करता है। शिवराज की सक्रियता से प्रभावित परिवारों को राजनीतिक समर्थन मिला, लेकिन सरकार के सामने वास्तविक चुनौती अब कार्रवाई को परिणाम तक पहुंचाने की है। प्रभावित लोगों की समस्याओं का समाधान, जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही और भविष्य में ऐसी स्थिति रोकने के उपाय ही इस घटनाक्रम का राजनीतिक निष्कर्ष तय करेंगे।

जनविश्वास की कसौटी

मध्यप्रदेश भाजपा 5 नवंबर तक युवा संपर्क अभियान चलाने जा रही है। इसमें मंत्री, सांसद और विधायक शामिल होंगे। पार्टी का उद्देश्य युवा मतदाताओं तक पहुंचना और कांग्रेस तथा अन्य विरोधी संगठनों के आंदोलनों का मुकाबला करना है। युवाओं को जोड़ने का अभियान भाजपा के संगठन विस्तार की रणनीति का हिस्सा है, लेकिन इसकी सफलता केवल सदस्यता, कार्यक्रमों और सोशल मीडिया गतिविधियों से तय नहीं होगी। युवा राजनीति में रोजगार, अवसर, नेतृत्व में भागीदारी और अपनी बात सुने जाने की अपेक्षा महत्वपूर्ण होती जा रही है। ऐसे में अभियान की वास्तविक उपयोगिता इस बात से तय होगी कि वह युवाओं की समस्याओं को कितना समझता है और उन्हें संगठन में कितनी प्रभावी भूमिका देता है। भाजपा के लिए यह अभियान नए राजनीतिक व्यवहार को समझने का अवसर भी है। यदि युवाओं को केवल कार्यक्रमों में भागीदारी तक सीमित रखा जाता है, तो संगठनात्मक जुड़ाव स्थायी नहीं बन पाएगा। इसके विपरीत, स्थानीय मुद्दों पर संवाद और निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी बढ़ाने से पार्टी अपने युवा आधार को मजबूत कर सकती है। इसलिए युवा अभियान का राजनीतिक महत्व केवल संगठन की ताकत दिखाने में नहीं, बल्कि यह जानने में है कि युवा भाजपा से क्या अपेक्षा रखते हैं और पार्टी उन अपेक्षाओं को कितना पूरा कर रही है। उधर, पन्ना जिले के देवेंद्र नगर से सीधी जिले के चुरहट तक रेल संचालन शुरू होना विंध्य क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण घटनाक्रम है। इससे क्षेत्रीय संपर्क बेहतर होने, यात्रियों की सुविधा बढ़ने और आर्थिक गतिविधियों को गति मिलने की संभावनाएं हैं लेकिन रेल संचालन शुरू होना और उसका व्यापक विकास में योगदान देना दो अलग-अलग चरण हैं। वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि सेवा कितनी उपयोगी रहती है, यात्रियों को कितनी सुविधा मिलती है और क्षेत्र के अन्य हिस्सों को बेहतर संपर्क का लाभ कितना मिलता है। भाजपा के लिए यह उपलब्धि विकास के दावे को जमीन पर दिखाने का अवसर है। विंध्य में रेल सुविधा के विस्तार को राजनीतिक उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है, लेकिन जनता के लिए इसका महत्व यात्रा की सुविधा, समय की बचत और क्षेत्रीय अवसरों में बढ़ोतरी से तय होगा। यही कारण है कि रेल संचालन की शुरुआत को अंतिम उपलब्धि के बजाय विकास की अगली प्रक्रिया के रूप में देखना अधिक महत्वपूर्ण है। इसके उलट, यदि आदिवासी परिवारों की समस्याएं अनसुलझी रहती हैं, युवा अभियान केवल औपचारिक गतिविधियों तक सीमित रहता है और रेल सुविधा का अपेक्षित लाभ दिखाई नहीं दिया, तो इन घटनाक्रमों से पैदा हुई अपेक्षाएं असंतोष में बदल सकती हैं।



भाजपा के लिए अब सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्न यह नहीं है कि वह कितनी बड़ी उपलब्धि का दावा करती है, बल्कि यह है कि जनता उन उपलब्धियों को अपने जीवन में कितना महसूस करती है। यही मध्यप्रदेश की राजनीति में आगामी चुनौती का वास्तविक केंद्र है। चुनावी समर्थन को स्थायी सामाजिक विश्वास में बदलने के लिए सरकार को संवेदनशील प्रशासन, युवाओं के साथ सार्थक संवाद और विकास के ठोस परिणाम तीनों मोर्चों पर अपनी प्रभावशीलता साबित करनी होगी। आने वाले समय में भाजपा की राजनीतिक मजबूती केवल संगठन की सक्रियता या विकास की घोषणाओं से नहीं, बल्कि इन तीनों कसौटियों पर उसके प्रदर्शन से तय होगी।

राजनीति से फिल्मों तक नंगापन, इसे देख बेचैन हो रहा मन

निशानेबाज

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, कितनी बुरी बात है कि फिल्मों से लेकर राजनीति तक नंगापन बढ़ गया है. शुचिता और शालीनता तो रह ही नहीं गई. कितनी ही पत्र पत्रिकाओं में अभिनेत्रियों व मॉडेल्स की बड़ी अधनंगी तस्वीरें इस उम्मीद से छापी जाती हैं कि इससे उनकी बिक्री बढ़ेगी. पहले उच्चकोटि के सार्वजनिक प्रोग्राम हुआ करते थे लेकिन अब लोग नग्नता का अवलोकन करने के लिए इंस्टाग्राम देखते हैं. बताइए व्यक्ति की दशा और दिशा क्या है ? समाज कहां जा रहा है?' हमने कहा, 'आपने कहावत सुनी होगी- अपने हमाम में सभी नंगे हैं. हमाम का अर्थ है स्नानघर या गुसलखाना ! उच्च आदर्शों वाले हमारे लोकतंत्र में भ्रष्टाचार की नग्नता व्याप्त है. जज के घर से अधजले नोट के बंडल निकलते हैं. जनकल्याण के पीछे स्वार्थ का नंगापन हैं. दान-चंदे की चोरी का नग्न सत्य सामने आ चुका है. वोट चोरी के नंगे सच की भी चर्चा हो रही है. इसे देखते हुए आप नग्नता को स्वाभाविक और सरल रूप से लीजिए.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, आप समस्या की गंभीरता को समझ नहीं रहे हैं. आजकल ओटीटी प्लेटफार्म पर अश्लीलता भरी नंगी फिल्में आ रही हैं जिन्हें परिवार के साथ बैठकर देख पाना मुश्किल है. न जाने कहां चली गईं धार्मिक और पौराणिक फिल्में?' हमने कहा, 'पहले भी धार्मिक फिल्मों में इंद्र के दरबार में अप्सराओं का डान्स दिखाया जाता था. साहित्य में प्रेमचंद जैसे समाजसुधार के बारे में लिखनेवाले लेखक थे तो सआदत हसन मंटो, पांडेय बेचन शर्मा उग्र और कुशवाहा कांत जैसे अश्लील लेखन वाले साहित्यकार भी थे. कला के क्षेत्र में नग्न चित्रकला या न्यूड पेंटिंग का अलग ही स्थान है. खजुराहो की नग्न मूर्तियां देखने विदेशी पर्यटक आते हैं और देखकर दंग रह जाते हैं. पशु-पक्षी, नदी, पहाड़, वृक्ष सभी खुले और अनावृत्त हैं. अफ्रीका के घने जंगल और अंदमान-निकोबार की जनजाति के लोग निर्वस्त्र रहते हैं. महात्मा गांधी की घुटनों तक पहनी छोटी धोती को देखकर तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने उन्हें 'नंगा फकीर' कहा था. आपको सृष्टि को देखने के लिए अपनी दृष्टि बदलनी होगी.'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर 12419

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	■	4		5	6
7			■		■	8	
	■	9	10		■	■	
11	12	■	13		■	14	
15		■		■	16		■
■		■	■	17		■	18
19		20	■	21		22	
23			■	24			

1. मसखरापन 2. मिट्टी या बालू का ऊंचा ढेर 3. साध, इच्छा, उत्कट अभिलाषा 4. नरमी, मृदुलता 5. रास्ता, मार्ग 6. मृगतृष्णा 10. चलायमान होना, डोलना 12. प्राणिशास्त्र, बायोलॉजी 14. बिच्छू-मधुमक्खी आदि छोटे जंतुओं का जहरीला कांटा 16. ठाटबाटपूर्ण, वैभवपूर्ण 17. दीया 18. अग्नि (सं.) 19. जीवात्मा, अजन्मा, कामदेव, बकरा 20. अवधि सूचित करने वाला अव्यय, पर्यंत 22. प्रभु राम की पत्नी

बाएं से दाएं

1. भड़कीला, चोट करने वाला 4. रोना-कलपना, हलचल 7. धर्म के अनुकूल, जायज (उर्दू) 8. हरे रंग की, सब्ज 9. किनारा 11. शर्त, दांव, करतब 13. बेल, जमीन या किसी आधार पर फैलने वाला पौधा 14. नगाड़ा 15. प्राणी 16. सब्जी 17. गरीब, असहाय 19. जिसका पता न हो, अविदित 21. पदारूढ़ 23. जन्म देने वाला, सीताजी के पिता का नाम 24. ताली बजाना, एक प्रकार का ताल देने का बाजा, झांझ, मंजीरा

ऊपर से नीचे

Solution 12418

प्र	ति	बिं	ब	■	प	सं	द
चं	■	ब	ल	वा	■	सा	ल
ड	ल	■	वा	■	गं	ध	■
■	क्ष	■	न	फा	■	न	म
प्र	णा	म	■	नू	ह	■	हा
सा	■	■	क	स	म	सा	ना
र	तौं	धी	■	■	■	म	य
ण	■	मा	या	व	ती	■	क

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

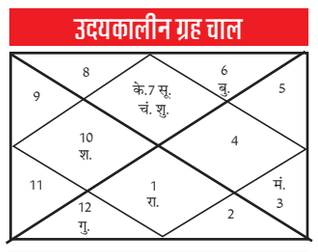
आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यर्थ की यात्रायें होंगी, धन व्यय होगा. मानसिक उलझन रहेगी. शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा. वर्ष के मध्य में व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होगा. सामाजिक कार्यों में ख्याति प्राप्त होगी. वर्ष के अन्त में भागदौड़ से मन तनावग्रस्त रहेगा. दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्राओं में धन व्यय होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को मानसिक उलझन रहेगी. सिह राशि के व्यक्तियों को व्यक्तित्व का विकास होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को संबंधों में सुधार होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ भागदौड़ से मन तनावग्रस्त रहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, एवं मिलनसार होगा, अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप पसंद नहीं करेगा, सेवा की भावना इनमें अधिक होगी, इनका सादा और आदर्शवादी जीवन रहता है, माता पिता का आदर करते हैं.

उदयकालीन ग्रह चाल



पंचांग

रा.मि. 04 संवत् 2083 आश्विन शुक्ल पूर्णिमा चन्द्रवासरे दिन 9/57, अश्विनी नक्षत्रे रात 7/15, वज्र योगे दिन 4/28, वव करणे सू.उ. 6/23, सू.अ. 5/37, चन्द्रचार मेष, पर्व-स्नानदान पूर्णिमा, शु.रा. 1,3,4,7,8,11 अ.रा. 2,5,6,9,10,12

शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, कपास के भाव में नरमी का रूख रहेगा, गुड़, खांड़, में समता रहेगी, गेहूँ, जौ, चना, मं मंदी रहेगी, जूटपाट बारदाना, के भाव में उठाव रहेगा.

भाग्यांक 2614 है.

मेष- लाभ के अवसर सामने आयेंगे, पारिवारिक जबाबदारी पूरी होगी, अधिक विश्वास पीड़ादायक रहेगा.

वृषभ- परिवार में विरोध का सामना करना पड़ सकता है, व्यवसायिक प्रयास सफल होंगे.

मिथुन- मन धनलाभ की नई युक्तियों की ओर केन्द्रित रहेगा, कार्यक्षेत्र में सहकर्मी से मतभेद संभव है.

कर्क- मन पर नियंत्रण रखकर अपने कर्त्तव्यों की ओर ध्यान दें, थोड़ा संयमी व धैर्यवान रहें, नवीन कार्य बनेगा.

सिंह- नई सामाजिक व्यस्ततायें सामने आयेंगी, महत्वपूर्ण दायित्वों की पूर्ति हेतु प्रयास तीव्र होगा, .

कन्या- धार्मिक एवं पारंपरिक कार्यो की ओर मन केंद्रित होगा, रोजगार के क्षेत्र में आपकी क्षमता का लाभ होगा,

तुला- राजकीय क्षेत्र में क्रियाशील रहेंगे, प्रियजनों का सानिध्य मिलेगा, नई सफलता के आसार बढ़ेंगे

वृश्चिक- निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें, व्यर्थ के तनाव मन पर प्रभावी रहेंगे, आय से अधिक धन व्यय होगा.

धनु- पुराने कष्टों को भूलकर वर्तमान को बेहतर बनायें, खरीदी पर विशेष खर्च होगा, व्यापार में लाभ होगा.

मकर- नई आकांक्षायें मन को उद्वेलित करेंगी, पुराने संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, आर्थिक चिन्ता रहेगी.

कुम्भ- जरूरी कार्य सार्थक होने का योग है, नौकरी में वातावरण सुखद रहेगा, मान सम्मान मिलेगा.

मीन- छोटी सी बात से संबंधों में खटास आ सकती है, खर्च पर नियंत्रण रखें. कार्यो में सफलता मिलेगी.

SUDOKU 7551

				5	1	4		
			7				2	
		8						3
	1							8
5				4				9
7							6	
4						7		
	2				6			
		3	9	8				

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो, इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7550

4	7	6	3	5	2	9	1	8
5	9	8	6	7	1	4	3	2
2	3	1	8	9	4	7	6	5
6	8	5	7	3	9	2	4	1
3	2	4	5	1	6	8	7	9
7	1	9	4	2	8	3	5	6
8	4	3	2	6	5	1	9	7
1	5	2	9	4	7	6	8	3
9	6	7	1	8	3	5	2	4